विश्व हिन्दी दिवस समारोह एवं कवि सम्मेलन

10 जनवरी 2019, गुरूवार

समय : सॉय 3 बजे,

चिधर्व हिन्दी साहित्य सम्मेलन

नागपुर में आपका स्वागत है।

चलो नागपुर चलें

विश्व हिन्दी परिषद

विश्व हिन्दी परिषद
हिन्दी भाषा विश्व भाषा
वसुधैव कुटुम्बकम्

011-41021455, 85860 16348
vishwahindiparishadoffice@gmail.com
85860 16348
www.vishwahindiparishad.org

विश्व हिन्दी परिषद की गतिविधियां

11वें विश्व हिन्दी सम्मेलन में विश्व हिन्दी परिषद के महासचिव डॉ. बिपिन कुमार मॉरीशस के प्रधानमंत्री श्री प्रवीन कुमार जगन्नाथ जी के साथ

मॉरीशस में आयोजित 11वें विश्व हिन्दी सम्मेलन में विश्व हिन्दी परिषद के महासचिव डॉ. बिपिन कुमार संबोधित करते हुए

विश्व हिन्दी परिषद के महासचिव डॉ. बिपिन कुमार जी भारत सरकार के केन्द्रीय मंत्री श्री नितिन गड़करी जी के साथ मंचासीन

विश्व हिन्दी परिषद के महासचिव, डॉ. बिपिन कुमार हिन्दी संबर्धन हेतु मिलने के क्रम में राष्ट्रपति महामहिम श्री रामनाथ कोविंद जी को गुलदस्ता भेंट करते हुए

परम पूज्य श्रद्धेय मोरारी बापू जी के साथ विश्व हिन्दी परिषद के महासचिव डॉ. बिपिन कुमार जी

विश्व हिन्दी परिषद -संक्षिप्त परिचय

विश्व हिन्दी परिषद लोक मंगल और सर्वकल्याण की भावना से अनुप्रदित हिन्दी भाषा के साधकों को प्रोत्साहित कर भाषा के उन्नयन और अविरल गति से चलने के प्रयास से जुटी अपने प्रयोजन और उद्देश्य को पूरा कर रही है।

हिन्दी प्रचार–प्रसार की सेवा में तत्पर कश्मीर से कन्याकुमारी तक के साहित्यकारों, हिन्दी अधिकारियों, कर्मचारियों एवं जनता को एक मंच पर एकत्रित करके एवं उन्हें अनुप्रेरित करते हुए यह संस्था विगत एक दशक से अपनी भूमिका निभा रहे हैं।

इसका उद्देश्य हिन्दी को समाज सापेक्ष, व्यावहारिक, प्रकार्यात्मक, कामचलाऊ और साथ ही जीवंत हिन्दी को सिखाना है, क्योंकि मातृभाषा, अन्य भाषा, राजभाषा, राष्ट्रभाषा, संपर्क भाषा और अंतर्राष्ट्रीय भाषा के रूप में हिन्दी की विभिन्न भूमिका है। यह सभी हिन्दी प्रेमी, विद्वानों एवं चिंतकों को एकत्र करके समय–समय पर हिन्दी भाषा एवं साहित्य के प्रति उसके कर्तव्य को याद दिलाता है, और उनमें दायित्व को जागृत करता है।

विश्व हिन्दी परिषद द्वारा वर्ष में हिन्दी दिवस – 14 सितम्बर एवं विश्व हिन्दी दिवस – 10 जनवरी को मनाया जाता है।

हिन्दीं की सेवा में तत्पर हिन्दी प्रेमियों को बढ़ावा देने एवं उनके योगदान को सराहने के लिए हर वर्ष राष्ट्रीय स्तर के पुरस्कारों से सम्मानित किया जाता है।

हिंदी में एक अन्तर्राष्ट्रीय भाषा होने की पूर्व क्षमता है।

–डॉ. बिपिन कुमार
महासचिव, विश्व हिन्दी परिषद

भारतीय भाषा दर्शन की यह सबसे बड़ी विशेषता है कि यहॉ शब्द केवल अर्थ के वाहक ही नहीं बल्कि परमार्श के साधक भी रहे हैं, शब्दानुशासन के प्रेणता पाणिनि ने अपनी अष्टाध्यायी के अंत में केवल एक ही अक्षर 'अ' को दुहरा कर समापन सूत्र 'अ अज्ञति' कहा, जिसमें समस्त भाषा तत्व का सार समाविष्ट है।वैदिक भाषा नागरी संम्प्रति का भाव सदैव से संस्कृत भाषा का रहा है। संस्कृति संवाहक संस्कृत का सात्विक तथा स्पृहणीय प्रयास अंकुरित होकर हिंदी के रूप में मुकुलित हुआ। हिंदी एक समृद्शाली भाषा है, इसमें 'वसुधैव कुटुम्बकम' की पवित्र भावना निहित है, क्योंकि भाषा का सीधा संबंध देश की संस्कृति से होता है इसीलिए हिंदी को भारतीय संस्कृति का मूल आधार कहा गया है जो अपने आंचल में समस्त भारतीय संस्कृतियों को समाहित किये हुए है। हिंदी मात्र भाषा ही नहीं बल्कि भारतीय संस्कृति की गौरव शाली संवाहिका भी है, राष्ट्रीय एकता एवं सांस्कृतिक चेतना को जोड़ने की क्षमता केवल हिंदी में ही है, इसीलिए यह हमारी संस्कृति का विश्व में साक्षात्कार कराती है। अपनी सरलता,सहदयता,सौहार्दता एवं सहज समन्वय के गुण के कारण हिंदी देश की ही नहीं अपितु विश्व के अन्य देशों में संपर्क भाषा का दायित्व निभा रही है।

हिंदी में एक अन्तर्राष्ट्रीय भाषा होने की पूर्व क्षमता है। इस क्षमता को आज के वैज्ञानिक सुग में पहचाना बहुत आवश्यक है। जो विद्वान, चिन्तक, भाषा वैज्ञानिक भाषा के प्रवाह की गति को पहचानते हैं वे समझने लग गये हैं कि निकट भविष्य में विश्व में कुल दस भाषाएं अन्तर्राष्ट्रीय महत्व की रह जायेगी और जिनमें आपसी आदान–प्रदान सहज और स्वयंचलित बनाने के लिए यांत्रिक सुविधाएं सुलभ हो सकेंगी, उनमें हिंदी का प्रमुख स्थान होगा। इन निष्कर्ष को मानने वालों में भाषा विज्ञान के सामाजिक पक्ष को समझने वाले और वस्तुपरक दृष्टि से भाषा की क्षमता पहचानने वाले भाषा–शास्त्री भी शामिल हैं।

भौगोलिक दृष्टि से भी हिंदी विश्व भाषा है क्योंकि हिंदी बोलने, लिखने या समझने वाले समूचे संसार में हैं, हिंदी एक सरल तथा सहज भाषा है जिसे आसानी से सीखा जा सकता है, इसका विपुल तथा समृद् वाडगय है। केवल दो लिंग वाली इस भाषा में पांच सौ धातुओं का प्रयोग होता है जिनमें आधी सकर्मक और आधी अकर्मक हैं, यह ध्वनि, पद,वाक्य, अर्थ आदि की दृष्टि से संस्कृत का सरल स्वरूप कहा जाता है। यह वैज्ञानिक तथ्य केवल हिंदी में ही दृष्टिगत होता है। हिंदी की लिपि संसार की सर्वाधिक वैज्ञानिक लिपि 'देवनागरी' है। विश्व हिंदी सम्मेलनों में यह बात उभर कर आई है कि हिंदी ऐसे देश की भाषा है जो विश्व शांति और विश्वबन्धुत्व के प्रति अगाध प्रेम रखता है। विश्व के मानचित्र पर हिंदी की प्रभावी लोकप्रियता जगजाहिर है। हिंदी की विश्वभर में स्थिति का आकलन कर यह सहज ही अनुमान लगया जा सकता है कि विश्व भाषाओं के बीच हिंदी का स्थान विश्व जनसंख्या के अनुपात में अग्रणी है।आज हिंदी एक राष्ट्र की सीमा तक ही नहीं अपितु विश्व भाषा के स्तर पर पहुंच चुकी है। विश्व के अनेक देशों में हिंदी की नवभाषिक शैलियों का जन्म हुआ है। फीजी में 'फीजीबात' सूरीनाम में 'सूरीनामी हिंदी', दक्षिण अफ्रिका में 'नैताली' तथा उजबेकिस्तान और तजाकिस्तान में 'पारया' के नाम से हिंदी पत्रिकाएं प्रकाशित हो रही हैं। हिंदी साहित्य का व्यापक स्तर पर विदेशी भाषाओं में अनुवाद हो रहा है तथा हिंदी के साहित्यिक और भाषायी पक्ष पर विश्व के अनेक प्रतिष्ठित विश्वविद्यालयों में अनुसांधान हो रहा है। विश्व के अधिकांश देशों में हिंदी बोली, समझी, लिखी और पढ़ी जाती है। लगभग 180 देशों में हिंदी प्रचलित है। हिंदी दुनिया की अधिकतम बोली जाने वाली भाषा है। अपनी सहजता, वैज्ञानिक संप्रेषणशीलता, चिन्तनशील चेतना के नाते हिंदी विश्व मानवता के एकता का ज्योतिपुंज है। हिंदी आज भारत में ही नहीं अपितु विश्व में विस्तारित है। विदेशों में हिंदी अध्ययन की प्राचीन परंपरा रही है सत्य तो यह है कि हिंदी भाषा के विश्लेषणात्मक अध्ययन की परंपरा का प्रारंभ भी विदेशियों द्वारा ही हुआ है। हिंदी व्याकरण लेखन परंपरा का श्री गणेश 17वीं शती के अंतिम दशक में हुआ और हिंदी का पहला व्याकरण ग्रंथ जॉन जोशुओं केटलियर ने लिखा।

हिंदी के विश्व के देशों में प्रसार में उन देशों की भूमिका बहुत अधिक महत्वपूर्ण है जिन देशों के विश्वविद्यालयों में हिंदी एक विषय के रूप में पढ़ाई जा रही है या हिंदी में उच्चस्तरीय शोघ अथवा लेखन हो रहा है। हिंदी अपने एक दूसरे रूप में उन विदेशियों के बीच भी प्रसार का माध्यम है जो भारतीयों के साथ या भारतीय मूल के व्यापारियों के साथ व्यापार में संलग्न हैं और अपने व्यापार के प्रयोजन के लिए हिंदी सीखना चाहते हैं। अप्रासंगिक नहीं है कि भारतीय परंपरा के अनुक्रम में हिंदी पूरे विश्व में आत्म अभिव्यक्तिध समाज व जनसमुदाय के सम्पर्क, राष्ट्र की अभिव्यक्ति और विश्वमैत्री के रूप में व्याप्ति पा सकी है।वैज्ञानिक रूप से प्रमाणित हिंदी में सभी गुण विद्मान हैं, इसके कार्यान्वयन की पद्ति सरल तथा सुगम है, इसीलिए हिंदी सही अर्थों में विश्व भाषा के लिए सर्वोत्तम है।

आने वाला समय निसन्देह भारत का होगा और आने वाला समय हिंदी का ही होगा।

विश्व हिन्दी दिवस और वैश्विक परिदृश्य में हिन्दी

डा अरुण सज्जन
वरिष्ठ हिन्दी अध्यापक लोयोला स्कूल जमशेदपुर
सह अतिथि प्राध्यापक
हिन्दी विभाग डी बी एम एस कॉलेज ऑफ
एडुकेशन, जमशेदपुर

विश्व में हिन्दी अब अपना पैर पसारती जा रही है।अनेकानेक देशों में देशों में हिन्दी अच्छी तरह बोली जा रही है और कई देशों की संपर्क भाषा के रूप में प्रतिष्ठित हो चुकी है यह गर्व का विषय है।आज वैज्ञानिक विकास और व्यापारिक विकास ने विश्व को एक साथ चलने के लिए बाध्य कर दिया है।आज से पचास वर्ष पूर्व लगभग कुछ देशों का आधिपत्य विज्ञान और व्यापार के ऊपर था पर अब स्थितियां तेजी से परिवर्तित हो रही हैं और बड़े राष्ट्र छोटे –छोटे राष्ट्र के संपर्क में आना चाहते हैं और उनके खनिज, उत्पाद और भाषा संस्कृति से लाभ उठाना चाहते हैं यह वैश्विक व्यापार या ग्लोब्लिजेशन भाषा–संस्कृति के आदान प्रदान प्राप्त कर लाभ उठाना चाहते हैं यह हिन्दी की सफलता मानें या परिस्थिति की मांग के रूप में स्वीकार करें। उसी प्रकार हिन्दी भाषा व्यापार और तकनीक ज्ञान के कारण जापान, कोरिया, चीन, अमेरिका, ब्रिटेन, जर्मन आदि पाश्चात्य देशों में भी अपना प्रभाव फाइलट जा रही है यह किसी से छिपा नहीं है। आज विश्व हिन्दी दिवस पर इस विषय पर जितना गर्व करने का अवसर है उतना ही हिन्दी को और जोर–शोर से प्रचारित प्रसारित करने की आवश्यकता है। यह हर्ष का विषय है कि हिन्दी दिवस का आयोजन वैश्विक स्तर पर घटित हो रहा है। साथ –साथ यह समय की महती मांग भी है कि विश्व के जन–जन तक हिन्दी को प्रचारित और प्रसारित करने के लिए एक आंदोलन के रूप में हिंदी दिवस को हमें एकजुट होकर सफल बनाना चाहिए। हिन्दी दिवस पर विश्व के अधिकांश देशों में विभिन्न प्रकार के आयोजनों को शामिल करना चाहिए। भारतवंशी जहां अधिकाधिक हैं जैसे नेपाल, म्यामार, लंका, काँधार, इंडोनेशिया आदि कई देश हैं जहां हिन्दी के कार्यक्रम सफलता पूर्वकआयोजित किए जा सकते हैं। प्रमुख कार्यक्रमों में निम्नलिखित कार्यक्रम को विशेष रूप से घटित करने की आवश्यकता है ———। हिन्दी कार्यशाला

————गैर सरकारी कार्यालयों में हिन्दी पखवारा या सप्ताह का आयोजन हो जिसमें निबंध प्रतियोगिता, वाद –विवाद प्रतियोगिता, कहानी लेखन प्रतियोगिता, कविता पाठ और अविता लेखन प्रतियोगिता का आयोजन विभिन्न कोटि के कर्मचारियों के बीच कराई जा सकती है। इस प्रतियोगिता का आयोजन एक हिन्दी प्रचार समिति गठित वकार करना अधिक बेहतर है। प्रतियोगिता के उपरांत सभी प्रतिभागियों को प्रतिभागी सम्मान पत्र और प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले विजेताओं को यथासंभव पुरस्कृत स्थानीय अधिकारियों से करा जाना श्रेष्यकर होगा। हिकषण संस्थाओं में हिन्दी संवाद..... विभिन्न कोटि के विद्यालयों और महाविद्यालयों में विद्यार्थियों के बीच हिन्दी संबंधी अनेक कार्यशाला और प्रतियोगिताएं संभव है। प्राथमिक कक्षा से बारहवीं कक्षा तक के विद्यार्थियों के बीच अलग– अलग प्रतियोगिताएं आयोजित वहाँ के प्रधानाचार्यों से विधिवत संपर्क कर चित्रांकन, पेंटिग, नाट्यमंचन निबंध लेखन और कविता लेखन प्रतियोगिताओं के आयोजन से हम विश्व हिन्दी दिवस को विभिन्न देशों में सरलता पूर्वक और सफलता से इस दिवस के उद्देश्यों को पूरा कर सकते हैं।

अन्तराष्ट्रीय स्तर पर हिन्दी को प्रतिष्ठा दिलाने के क्रम में पूर्व प्रधान मंत्री अटलविहारी वाजपेयी ने संयुक्त राष्ट्र संघ में सर्वप्रथम हिन्दी में अपना सम्बोधन कर शंखनाद किया। उसके बाद लगातार वर्तमान प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी और विदेश मंत्री आदरनीया सुषमा स्वराज ने अपना सम्बोधन हिन्दी में कर हिन्दी को प्रतिष्ठा प्रदान की। हमारे व्यापार के सम्बन्धों ने जहां विश्व के कोने दृकोने में हिन्दी को प्रचारित प्रसारित किया है वहीं फिल्मों के सितारे और गीत संगीत ने भी हिन्दी का परचम विश्व पटल पर लहराने में कोई कसर नहीं छोड़ा है। केंद्रीय हिन्दी संस्थान ने जिस प्रकार देश के अनेक अहिंदी राज्यों में हिन्दी के प्रचार प्रसार का कार्य सुचारु पूर्वक निभाया है उसी प्रकार अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी प्रयसरत है जिससे कि अहिंदी प्रदेश के वासी हिन्दी सीख सकें।

जब राष्ट्र गुलाम था तब राष्ट्र की स्वतन्त्रता प्राप्ति के लिए पूरे देश के स्वतन्त्रता सेनानियों ने एकस्वर से हिन्दी को राष्ट्र भाषा के रूप में मान्यता दी और भारत के अधिकाधिक भू –भाग में हिन्दी बोले जाने वाली भाषा को राष्ट्र भाषा के रूप में प्रतिष्ठा दी थी। इसी प्रकार प्रसिद्ध शिक्षा शास्त्री एनी बेसेंट ने कहा था "म्मातृभाषा द्वारा शिक्षा के अभाव ने भारत को निश्चय ही, विश्व के देशों में अत्यंत अज्ञानी बना दिया है। "मई समझता हूँ आज हमारे संयुक्त प्रयास से हिन्दी भी उसी प्रकार शीघ्र ही विश्व पटल पर प्रतिष्ठा पाने में सफल होगी। हमारे भारत वासी विश्व के जिस भी देश में व्यापार या नौकरी कर रहे हैं अपनी पूजा पद्धति और संस्कृति के प्रति प्रेम के प्रदर्शन कर हिन्दी को प्रतिष्ठित कर रहे हैं। इस क्रम मे विश्व स्तर पर भारतवासियों के बीच दुर्गा पूजा, रावण दहन, होली, और सबसे बढ़कर छठ व्रत के आयोजन ने विदेशियों के मन मस्तिष्क में हिन्दी और हिन्दी संस्कार के प्रति रुचि बढाई है। आज कम्प्युटर की भाषा हिन्दी होती जा रही है। आज के मात्र दस वर्ष पूर्व हिन्दी में लिखना कम्प्युटर पर कठिन था जब कि आज बिलकुल आसान हो चुका है।

हमारे वेद वेदान्त का अध्ययन आज विदेशियों के लिए कौतूहल और ज्ञान का प्रमुख विषय है। अतः हिन्दी और संस्कृत के विद्वानों की आवश्यकता विश्व के प्रमुख देशों के विश्वविद्यालयों में बढ़ती जा रही है। यह हिन्दी का परिदृश्य बताता है कि हिन्दी का सूर्य पूरब के साथ–साथ पश्चिम में भी उदयमान हो रहा है।

विश्व हिन्दी परिषद की भूमिका आज के परिप्रेक्ष्य में महती हो चुकी है। विश्व के अनेक देशों में इसके संगठन को बढ़ाने की जरूरत है और विदेशों में शनै–शनै हिन्दी दिवस का आयोजन, भ्रमण, विशविद्यालयों में सेमिनार, कार्यशाला और साहित्यिक/सांस्कृतिक आयोजनों को मजबूती से उत्सव के रूप में करने कि योजना को चरणबद्ध तरीके से करना होगा फिर विश्व हिन्दी दिवस की सार्थकता और हमारी हिस्सेदारी सुनिश्चित होगी ऐसा मेरा विश्वास है।

विश्व हिंदी दिवस

विश्व परिदृश्य में हिंदी के हितचिंतक विदेशी हिंदी शिक्षक

पूर्णिमा पाटिल
(वरिष्ठ पत्रकार और लेखिका)

विश्व हिंदी दिवस के अवसर पर जब हम हिंदी को वैश्विक परिदृश्य में देखना शुरू करते हैं, तो विश्व के विभिन्न देशों में हिंदी के विदेशी विद्वानों के हिंदी प्रेम, उनकी विदेशी विद्यार्थियों को हिंदी सिखाने की प्रतिबद्धता, रुचि, लगन, परिश्रम और उनके स्वयं ईजाद किये गए पढ़ाने के अनूठे तरीके, जिससे विद्यार्थियों को हिंदी सीखने के लिये प्रोत्साहित किया जाए, सचमुच सराहनीय और अनुकरणीय हैं। विश्व में हिंदी के प्रचार प्रसार में इन विदेशी हिंदी शिक्षकों के योगदान की चर्चा विश्व हिंदी दिवस में महत्वपूर्ण स्थान रखती है। मैंने इन विदेशी हिंदी विद्वानों के साक्षात्कार लिये हैं। आइए, विश्व हिंदी दिवस के शुभ अवसर पर हम उनके शिक्षण कार्यों का अभिनंदन करें.....

1) पीटर फ्रेडलैंडर ऑस्ट्रेलिया में हिंदी शिक्षक

हिंदी विद्वान डॉ पीटर केनबरा की ऑस्ट्रेलियन नेशनल यूनिवर्सिटी में हिंदी शिक्षक हैं। उन्होंने संत रविदास की 'कृतियों और जीवनी' पर शोध कार्य किया है। वे रैदास, कबीर और चरणदास पर शोधकार्य में सक्रिय हैं। कबीर वाणी का इतिहास, बुद्ध धर्म में शांति और संघर्ष, संत रविदास पर वे पुस्तकें लिख चुके हैं। उनके अनेक लेख, शोधपत्र प्रकाशित हो चुके हैं। 30 से अधिक वर्षों तक वे अध्यापन कार्य विभिन्न देशों में कर चुके हैं– इंग्लैंड, भारत, सिंगापुर और अब ऑस्ट्रेलिया में हिंदी अध्यापन कार्य कर रहे हैं।

पीटर ने सन 2007 में नेशनल यूनिवर्सिटी ऑफ सिंगापुर में हिंदी विभाग की स्थापना की थी और उन्हें 'एक्सलेंस ऑफ टीचिंग' अवॉर्ड से सम्मानित किया गया था।

उन्होंने हिंदी अध्यापन के अपने अनुभव से हिंदी सिखाने के कुछ सार्थक प्रयोग किये हैं। बिलकुल हिंदी न जानने वाले छात्रों की रूचि के अनुसार पीटर ने कुछ सृजनात्मक खेल तैयार किये। इसके लिए छात्रों को अलग अलग दलों में विभाजित किया। इन सभी छात्रों को एक फिल्म तैयार करने को कहा गया। कुछ ने स्क्रिप्ट तैयार की। कुछ ने नायक खलनायक की भूमिका लिखी। कुछ ने डायलॉग तैयार किये। फिल्म की बकायदा शूटिंग की गई। छात्रों ने इसमें बहुत रूचि दिखाई और बहुत कुछ सीखा। हिंदी सिखाने में यह तरीका कामयाब रहा।

पीटर कहते हैं कि हिंदी सीखने के लिए बॉलीवुड भी एक अच्छा खिलौना है। यह विद्यार्थियों को हिंदी सीखने के लिए आकर्षित करता है। पहले वह दिखाया जाना चाहिए जो आकर्षक है, जिससे छात्र हिंदी सीखने अंदर आएंगे। आगे चलकर टीवी, अखबार द्वारा हिंदी सीखने में दिलचस्पी पैदा की जाए फिर दूसरे तीसरे वर्ष में कहानियां कविताएं पढ़ाना चाहिए। इस तरह बिलकुल हिंदी न जानने वालों को अंत में हिंदी साहित्य के बारे में असली शिक्षा दी जानी चाहिए।

पीटर ने हिंदी सिखाने के लिए सामग्री, संयोजन, प्रयोजन स्वयं तैयार किया। छात्रों से ज्यादा से ज्यादा हिंदी में बातचीत की और प्रयत्न किया कि छात्र हिंदी में ही ज्यादा

बोलें। पीटर का मानना है कि हिंदी सिखाने के लिए आजकल की जनसंस्कृति अपनाई जानी चाहिए तभी नई पीढ़ी हिंदी सीखने में रूचि ले सकती है।

2) मार्को जोली इटली में हिंदी शिक्षक

श्री मार्को जोली इटालियन हैं। हिंदी प्रेमी हैं। फर्राटेदार हिंदी बोलते हैं। हिंदी साहित्य उन्होंने खूब पढ़ा और समझा है। सुख्यात हिंदी कहानीकारों, कवियों की रचनाओं के अनुवाद कार्य भी वे करते रहते हैं। वे इटली में हिंदी के शिक्षक हैं। उनकी विशेषता यह है कि वे अपने विद्यार्थियों को वर्तमान स्थिति की आवश्यकतानुसार हिंदी शिक्षा देने में रुचि रखते हैं। उनकी पहली कोशिश होती है कि छात्र हिंदी सीखने का मन बनाएं और इस सुंदर भाषा को समझने का प्रयास करें इसलिए वे व्याकरण और शुद्धता को लेकर अपने छात्रों को परेशान नहीं करते हैं। यही कारण है कि छात्र हिंदी को सरलता से सीख सकनेवाली भाषा के रूप में शीघ्र स्वीकार करते हैं। वे छात्रों को सर्वप्रथम बोलचाल की हिंदी भाषा से परिचित कराने का प्रयास करते हैं।

उनका मानना है कि आजकल युवा, व्यापार और रोजगार की भाषा के रूप में हिंदी सीखना ज्यादा पसंद कर रहे हैं इसलिए वे इस कार्य में छात्रों की मदद करते हैं। प्रो.मार्को जोली ने हिंदी से संबंधित 'व्यापार केंद्र' इटली में प्रारंभ किया है, जहाँ भारतवर्ष में होने वाली व्यापारिक गतिविधियों से इटली के युवा जुड़ सकें।

श्री मार्को जोली उन छात्रों को हिंदी साहित्य पढ़ाते हैं, जो अपने ज्ञान और विकास के उद्देश्य से इस भाषा को सीखने की जिज्ञासा रखते हैं । इन छात्रों को श्री मार्को हिंदी भाषा की संस्कृति, इतिहास, साहित्य पढ़ाते हैं।

जोहान्सबर्ग में सन 2012 में आयोजित विश्व हिंदी सम्मेलन में विद्वान हिंदी शिक्षक प्रो. मार्को जोली को 'विश्व हिंदी सम्मान' से विभूषित किया गया था।

3) डॉ रिचर्ड बार्ज ऑस्ट्रेलिया में हिंदी शिक्षक

डॉ बार्ज ऑस्ट्रेलियन नेशनल यूनिवर्सिटी केनबरा में हिंदी उर्दू के शिक्षक रहे हैं। जब वे 18 वर्षीय युवा थे, तब उन्होंने भगवद्गीता का अंग्रेजी अनुवाद पढ़ा था और रिचर्ड की रुचि भारतवर्ष के प्रति बढ़ गई। शिकागो विश्वविद्यालय से उन्हें हिंदी में डॉक्टरेट की उपाधि 1971 में प्राप्त हुई। वे हिंदी, उर्दू, बृज, अवधी, फिजी हिंदी, मौरीशियस भोजपुरी पर लेखन कार्य करते रहे हैं। वे 'द भक्ति सेक्ट ऑफ वल्लभाचार्य' पुस्तक के लेखक हैं। उन्होंने अवधी लोककथा का लेखन कार्य किया है।

43 वर्षों तक वे हिंदी पढ़ाने का कार्य करते रहे हैं। उन्होंने कैलिफोर्निया, बर्कले, ऑस्ट्रेलिया में हिंदी–उर्दू पढ़ाने का कार्य किया है।

एक अनुभवी शिक्षक के रूप में ऑस्ट्रेलिया में हिंदी की पढ़ाई को लेकर वे कहते हैं कि यहाँ रहने वाले भारतीय अपने घर और सड़क पर भी हिंदी बोलें ताकि लोग सुनकर जानेंगें कि हिंदी, एक बड़ी संख्या में ऑस्ट्रेलिया में बोली जाने वाली भाषा है। अफसोस कि भारतीय आपस में और बच्चों के साथ अंग्रेजी ज्यादा बोलते हैं।

हिंदी प्रेमी विद्वान रिचर्ड को भारतवर्ष में बच्चों के लायक रोचक शैली में कहानियों की उत्कृष्ट रंगीन चित्रों वाली आकर्षक पुस्तकों का अभाव बहुत खलता है। वे कहते हैं कि बच्चों के लिये कहानियां हिंदी भाषा से ही लेनी चाहिए न कि दूसरी भाषाओं की कहानियों के अनुवाद से यह पुस्तक बने। और इसके लिए लेखकों ने बच्चों को ध्यान में रखकर उनके लायक हिंदी भाषा में कथाओं का सृजन कार्य करना चाहिए।

शिक्षा क्षेत्र के इस सुयोग्य हिंदी शिक्षक का कहना है कि वे कभी भी हिंदी से रिटायर नहीं होंगें।

4) प्रो. हिदेआकि इशिदा जापान में हिंदी शिक्षक

श्री हिदेआकि इशिदा जापान के दाईतो बुंका विश्वविद्यालय में हिंदी के शिक्षक हैं। उन्होंने हिंदी विषय पढ़ने के लिए 1973 में दिल्ली विश्वविद्यालय में प्रवेश लिया था। उन दिनों उन्हें हिंदी साहित्य के बड़े बड़े लेखकों–विद्वानों जैनेंद्र जी, अमृतराय जी, इलाचंद्र जोशी जी, यशपाल जी, नागर जी, रघुवीर सहाय जी, श्रीकांत वर्मा जी, भीष्म साहनी जी आदि से मिलने बोलने का सुअवसर प्राप्त हुआ था। उन मुलाकातों से प्राप्त आनंद को वे दुनिया का सबसे अमूल्य खजाना मानते हैं।

वे हिंदी साहित्य के विद्वान हैं परंतु शिक्षक के रूप में बदलती परिस्थिति को देखते हुए वे अब कक्षा में सिर्फ हिंदी साहित्य की बात नहीं करते हैं। वे कहते हैं कि शिक्षक अब तक हिंदी उच्चारण, व्याकरण, भाषा सिखाने के नए तरीके और आधुनिकतम तकनीकी उपकरण काम में लाते रहे परंतु अब हम जापानी शिक्षकों को छात्रों से भविष्य की संभावना की बात ज्यादा करनी पड़ती है। आजकल के छात्र पूर्व के छात्रों की तरह भारत को सिर्फ पुरातन संस्कृति का देश या बुद्ध और ताजमहल का देश नहीं समझते हैं। वे हिंदी को अपने रोजगार या व्यवसाय से संबंधित हो सकने वाली भाषा के रूप में देखने लगे हैं। ऐसे मुद्दों पर अब भाषा शिक्षक, छात्रों की रुचि को देखकर हिंदी पढ़ाई के प्रति छात्रों के हौसले को बनाए रखने की कोशिशें करते हैं। भारतवर्ष में जो भी नया परिवर्तन होता है, आर्थिक नीतियों में परिवर्तन होता है, उसकी कक्षा में चर्चा करने की कोशिश हम शिक्षक जरूर करते हैं।

हिंदी विद्वान शिक्षक हिदेआकि इशिदा 'हिंदी साहित्य' नामक पत्रिका को जापान से प्रकाशित करते हैं। इसमें वे हिंदी कहानियों, कविताओं, साहित्यिक रचनाओं के जापानी अनुवाद देते हैं और जापानियों द्वारा हिंदी भाषा और साहित्य पर लेखन कार्य को भी पत्रिका में स्थान देते हैं।

हिंदी सेवी इशिदा कहते हैं कि ''उन्हें जिंदगी में हिंदी साहित्य और हिंदी भाषा से जो भी मिला है, उसका लाखवां हिस्सा भी अपने हिंदी कार्य के माध्यम से जापानियों तक पहुंचा सकूँ तो मैं अपने को सौभाग्यशाली मानूँगा।''

इस जापानी हिंदी प्रेमी को जोहान्सबर्ग में आयोजित विश्व हिंदी सम्मेलन में 'विश्व हिंदी सम्मान' प्राप्त हो चुका है।

विश्व हिंदी सम्मेलन कितना सार्थक रहा

डा.राकेश पाण्डेय

11वां विश्व हिंदी सम्मेलन अभी हालही में मॉरीशस में हुआ जिसमें देश विदेश से हिन्दी प्रेमी सम्मिलित हुए। यह आयोजन मॉरीशस में तीसरी बार हुआ है। देश में भी हिंदी की स्थिति संतोषजनक नहीं है। हमारे देश के अनेक भागों में अभी भी हिंदी के विरोध में स्वर सुनाई पड़ जाते हैं। कभी–कभी तो संसद में भी कहा सुनी हो जाती है, जैसेकि विगत दिनों विदेश मंत्री सुषमा स्वराज और शशि थरूर में हुआ।

विश्व हिंदी सम्मेलन की शुरुआत पर नजर डालें तो यह बहुत मनोभाव से आरम्भ किया गया विराट आयोजन था। इसके उद्देश्य पवित्र थे, तभी यह विश्वव्यापि हुआ। विश्व हिंदी सम्मेलन का आरंभ 1975 में जब हुआ उस समय राष्ट्रभाषा भाषा प्रचार समिति वर्धा के द्वारा आयोजन के मूल भाव में हिंदी को विश्वव्यापी करना था। उसका केन्द्रीय विषय 'वसुधैव कुटुम्बकम' रखा गया। हिंदी को वसुधा की भाषा के रूप में स्थापित करने की परिकल्पना की गई। इस आयोजन में संत विनोवा भावे, फादर कामिल बुल्के, मारीशस के तत्कालीन प्रधानमंत्री सर शिव सागर रामगुलाम और भारत की तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गाँधी सहित अनेको दिग्गज इस आयोजन का अंग थे, जबकि यह एक संस्था का आयोजन था। प्रधानमंत्री लालबहादुर शास्त्री जी के काल में हिंदी का दक्षिण भारत में बहुत विरोध हुआ था। वैसे भी सन 1949 में संविधान सभा मे हिंदी राष्ट्रभाषा बनने से वंचित रह गई और वह राजभाषा बनकर रह गई। इस आयोजन की महत्ता यह रही कि निजी संस्था द्वारा आरंभ किया गया आयोजन भारत सरकार स्वयं अपना लेती है और चौथे विश्व हिंदी सम्मेलन के बाद सभी सम्मेलन भारत सरकार के विदेश मंत्रालय द्वारा आयोजित किए जाते हैं। सम्मेलन की प्रासंगिकता पर हर बार प्रश्नचिह लगाये गए। यह भी सत्य है कि हर बार कुछ ना कुछ विसंगतियां आ जाती हैं लेकिन इससे आयोजन की मूल भावना को नकारा नहीं जा सकता है।

एन्साक्लोपिडीया ऑफडायस्पोरा में वर्णित आंकड़ों के अनुसार मॉरिशस की सरकारी जनसंख्या गणना में सन 1990 में कुल जनसंख्या में मॉरीशस में हिंदी बोलने वालों की संख्या 12800 (1.2 प्रतिशत) थी, इसके बाद सन 2000 की जनगणना में यह संख्या 7300 (0.6 प्रतिशत) और उसके बाद सन 2011 में यह संख्या अन्य भाषाऑ की श्रेणी में सम्मिलित हो गई। इन आंकड़े नजरअंदाज नहीं किए जा सकते हैं।

ऐसे में मारीशस के प्रख्यात लेखक अभिमन्यु अनत का सन 1976 में पहली बार मारीशस में होने जा रहे दूसरे विश्व हिंदी सम्मेलन के बारे में धर्मयुग में प्रकाशित एक लेख याद आ रहा है, जिसमे उन्होंने कहा था कि 'मारीशस में सम्मेलन होने जा है, इससे स्थिति में क्या परिवर्तन आएगा? मनोवृति कहां तक बदल सकेगी, कह नहीं सकते।' उन्होंने यह आशा व्यक्त की थी कि 'मारीशस में विश्व हिंदी सम्मेलन जहां हिंदी की अंतर्राष्ट्रीयता का प्रमाण देगा, वहां वह इस भाषा की जड़ को भी मजबूत बना जाये। मारीशस तूफानों का देश है, आज का दरख्त कल उखड़ जाता है, अगर उसकी जड़े जमीन के भीतर तक न हों तो। यहां पर इस भाषा और इस भाषा के साहित्य को समृद्ध और सशक्त बनाना इस सम्मेलन का उद्देश्य होना चाहिए। हिंदी के बल पर यंहा अन्य भारतीय भाषाओ को भी शक्ति मिले। स्वयं की स्तुति आजकल प्रायः दिखाई दे रही है, फेसबुक आने के बाद और अधिक हो गया। उस पर अनत जी ने लिखा है कि 'हिंदी सम्मेलन अगर मात्र अपने व्यक्तित्व को अधिक उभारने या सीमित लाभ तथा स्वार्थ के लिए हुआ, तो वह क्षणिक सरगर्मी के सिवा कुछ भी नहीं होगा और तीन दिन की नुमाइश के बाद इसका कोई असर या नामोनिशान बाकी नही रहेगा।' यही शंकाए जो थी वह इस सम्मेलन में सच हुई हैं।

भारत के वक्ताओं को भारतीयों द्वारा मॉरीशस में जा कर सुनना, हिंदी का परिहास उड़ाना ही होगा। विश्व हिंदी सम्मेलन मात्र एक भाषा का सम्मेलन नहीं है, इसके साथ संस्कृति का विस्तार भी जुड़ा हुआ है। यह एक भारतीय विदेश कूटनीति का भी अंग है। भाषा ग्लोबल और लोकल नहीं होती। हमें सकारात्मक सही निर्णय लेने होंगे और जनता तक अपनी बात पहुंचानी होगी। हिंदी रिक्शे नहीं रॉकेट की भाषा बने, हिंदी अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर संवाद की भाषा बने, हिंदी शोधकार्यो की भाषा बने। हिन्दी भाशा को लेकर होने वाले तमाम कार्यक्रमों से हमें यही आशा है।

भूमण्डलीकरण के परिप्रेक्ष्य में हिन्दी

डॉ0 जंगबहादुर पाण्डेय
हिन्दी विभाग राँची विश्वविद्यालय, राँची

भूमण्डलीकरण के शोर में हिन्दी की चुनौतियों पर चर्चा के पूर्व भूमण्डलीकरण को स्पष्ट करना होगा। वास्तव में 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की भारतीय अवधारणा का ही नया उत्तर आधुनिक उन्मेष भूमण्डलीकरण है। आज का दौर भूमण्डलीकरण का है, जिसकी आँधी ने भाषा, समाज, संस्कृति, साहित्य सबके परिदृश्य को बदल कर रख दिया है। आज भूमण्डलीकरण की प्रक्रिया में नई–नई प्रेरणाएँ, परिकल्पनायें और दिशाएँ देश, समाज और उसकी अभिव्यक्तियों को आंदोलित कर रही हैं। विश्व के मानचित्र पर उच्च प्रौद्यौगिकी का ऐसा झरना प्रवाहित हो रहा है, जिसने विश्वग्राम या ग्लोबल विलेज की परिकल्पना को साकार कर दिया है। विश्वग्राम और भूमण्डलीकरण का वर्तमान स्वरूप निश्चय ही 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की हमारी सनातन धारणा से बहुत भिन्न है। भारतीय मनीषियों ने मानवीय मूल्यों और शाशवत जीवन सम्बन्धों के स्तर पर सारे संसार को एक परिवार की तरह बाँधने का संदेश दिया था, जबकि भूमण्डलीकरण का अभिप्राय ऐसा कुछ नहीं है। भूमण्डलीकरण सूचनाक्रांति और तकनीकी विस्तार के इस युग में एक विशुद्ध आर्थिक–सामाजिक अवधारणा है। यह अवधारणा सारे संसार को बाजार में बदलती है जहाँ मनुष्य मनुष्य नहीं रह जाता। वह विक्रेता और उपभोक्ता में बदल जाता है। यही नई सोच भूमण्डलीकरण की तस्वीर को भारतीय 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की भावना से भिन्न करती है। भारतीय मनीषियों की भावना मानवीय थी, जिसमें समूचे विश्व को प्रेम, करूणा, ममता जैसे स्वाभाविक मानवीय सूत्रों में बाँधने की योजना थी। लेकिन भूमण्डलीकरण विशुद्ध रूप से आर्थिक अवधारणा है, जो सारे संसार में एक नई आर्थिक–सामाजिक स्थिति की परिकल्पना लेकर आई है। यह विभिन्न देशों के बीच निर्बाध आर्थिक सम्बंधों की ऐसी प्रक्रिया है, जो देश विशेष की अपनी सारी विशिष्टताओं को लाँघ कर एक व्यापकतर आर्थिक समूह को प्रोत्साहित करती है। मशीन के आविष्कार के साथ ही 18वीं शताब्दी के अंतिम दौर में इस प्रक्रिया का प्रारम्भ हो गया था जब सारे संसार में इंग्लैंड की मशीनों और उनके उत्पादों का प्रचार हुआ। भारत के स्वाधीनता संग्राम में विदेशी वस्त्रों की होली जला कर भूमण्डलीकरण के उसी खतरे का निषेध किया गया था, जिसने साम्राज्यवाद और बाजारवाद के रूप में भारतीय स्वाधीनता के बाद विस्तार पाया। परिणामतः दिल तो हिन्दुस्तानी ही रहा, लेकिन एक पुराने फिल्मी गीत के अनुसार 'जूता जापानी', पतलून इंग्लिस्तानी और टोपी रूसी' हो गई। यह भूमण्डलीकरण का ही परिणाम है कि बाजार की खोज में लगे विकसित देशों के उत्पादनों से भारत का बाजार भरा हुआ है। एक विराट आर्थिक–व्यावसायिक शोषण को प्रोत्साहित कर रहा है भूमण्डलीकरण, जिसका प्रभाव केवल आर्थिक स्थितियों पर ही नहीं–समाज और संस्कृति के हर पहलू पर पड़ा है। हिन्दी भाषा और साहित्य भी इससे अछूता नहीं है।

भूमण्डलीकरण के पक्षधर तर्क देते हैं कि बदलते तकनीकी परिदृश्य में भूमण्डलीकरण समूचे विश्व की एक आवश्यक आवश्यकता है। इससे संसार की अर्थव्यवस्था को दृढ़ता मिलेगी और व्यापक आर्थिक सहयोग से एक नए युग का सूत्रपात होगा। भूमण्डलीकरण के बिना हम समूचे विश्व के साथ ताल से ताल मिला कर नहीं चल सकते, विकास की सीढ़ियाँ नही चढ़ सकते–ऐसा भी कहा जा रहा है। वास्तव में भूमण्डलीकरण विश्व में वित्त बाजार और विकसित तकनीकों की ऐसी समन्वित प्रक्रिया है, जिसने विश्व के देशों को तूफानी गति से एक दूसरे के अत्यंत करीब लाकर खड़ा कर दिया है। यही कारण है कि आज विश्व के सभी प्रभुत्वपूर्ण शक्तियाँ भूमण्डलीकरण की धारणा की नए–नए अर्थों और नए–नए स्वरूपों में प्रस्तुत करती हुई उसकी विश्वसनीयता सिद्ध करने में जुटी हैं। हमारे देश के उत्तर–आधुनिक चिन्तक भी भूमण्डलीकरण की व्याख्याएँ कर रहे हैं। हमारी सामाजिक–आर्थिक व्यवस्था से लेकर भाषा–संस्कृति तक भूमण्डलीकरण के अभिलक्षणों का प्रभाव नजर आ रहा है। हिन्दी भाषा की नई दिशाओं और साहित्य की अत्याधुनिक प्रवृत्तियों पर भी इसका सीधा प्रभाव लक्षित होता है।

भूमण्डलीकरण की अपनी कुछ खास प्रवृत्तियाँ और विशिष्टताएँ हैं, जिनसे आज की हिन्दी जुड़ी हुई है। भूमण्डलीकरण की प्रक्रिया में मुक्त बाजार व्यवस्था का सिद्धान्त उपभोक्ता की सर्वोच्चता का नारा देता है। इस उपभोक्तावादी संस्कृति में भाषा और साहित्य का मूल्यांकन भी उनकी उपयोगिता की दृष्टि से, बाजार की दृष्टि से होने लगा हैं हिन्दी भाषा के प्रयोजनमूलक स्वरूप का विस्तार साक्षी है कि यह भाषा अब पहले जैसी नहीं रह गई है। हिन्दी की शब्दावली, अर्थ क्षमता और प्रयोजनीयता पिछले कुछ वर्षों में अप्रत्याशित रूप से बदल गई है। जनसंचार के संसाधनों में आई तकनीक समृद्धि का प्रभाव हिन्दी भाषा पर भी पड़ा है। रेडियों, टी.वी., कम्प्यूटर, इंटरनेट और पत्रकारिता के अत्याधुनिक तकनीकों से आज की हिन्दी जुड़ी हुई है। सूचना क्रांति का ही यह परिणाम है कि हिन्दी का जो स्थानीय समाचारपत्र आपके दरवाजे पर सुबह सात बजे पहुंचता है, बंगलोर और कोचीन में इंटरनेट पर सुबह चार बजे ही उपलब्ध

हो जाता है। हिन्दी भाषा पर भूमण्डलीकरण की उपभोक्ता संस्कति के प्रभाव का ही यह परिणाम है कि उसकी शब्दावली और वाक्य–योजना में अंतर्राष्ट्रीय विषयों का निरन्तर समावेश होता जा रहा है। कितने ही ऐसे शब्द केवल कोश तक सिमट कर रह गये हैं, जिनका सम्बन्ध मनुष्य और उसकी शाश्वत संवेदनाओं से रहा है। हमारी आज की हिन्दी में ऐसे शब्दों की बहुत बड़ी संख्या है जिनकी अंतर्राष्ट्रीय बाजार में उपयोगिता है। वही साहित्य भी लिखा जा रहा है, जो उपभोक्ताओं को पसंद आता है। मीडिया के सभी स्तरों पर चटपटी खबरों और लुभावनी रचनाओं को प्रमुखता दी जा रही है। यह भूमण्डलीकरण का ही परिणाम है कि हमारा सारा सूचनातंत्र विज्ञापनों से आक्रांत है। विश्वबाजार विज्ञापन की महिमा से ओतप्रोत है। धर्मयुग, सारिका, साम्ताहिक हिन्दुस्तान, ज्ञानोदय, जैसी जीवन्त पत्रिकाओं की जगह इंडिया टुडे, आउटलुक, झारखण्ड टुडे जैसी पत्रिकाएँ भूमण्डलीकरण का प्रसार कर रही हैं।

भूमण्डलीकरण का एक प्रमुख चरित्र यह भी है कि वह जातीय विभेद, सांस्कृतिक वैविध्य और अन्य विविधताओं को मिटाकर समान रुचियों वाली एक संस्कृति का 'विश्व मॉडल' बनाने का प्रयास करता है। भूमण्डलीकरण की प्रक्रिया में विश्व अर्थ व्यवस्था की समरूपता का दावा किया गया है। यह दृष्टिकोण क्षेत्रीय तथा राष्ट्रीय संस्कृतियों के ध्वंस की वकालत करता है, भूमण्डलीकरण के कारण भारतीय संस्कृति की आधारभूत संरचना में जो परिवर्तन हुए हैं, वह किसी से छिपे हुए नहीं हैं। हर इलाके की क्षेत्रीय संस्कृति इसके दंश से प्रभावित हो रही है। झारखण्ड, बिहार, बंगाल, असम, छत्तीसगढ़ हर जगह सांस्कृतिक .... स्खलन का पृष्ठभूमि में भूमण्डलीकरण की यह प्रक्रिया है। इसका सीधा प्रभाव हिन्दी भाषा और साहित्य पर भी दिखाई देता हैं द्वारका प्रसाद का उपन्यास 'घेरे के बाहर' जब 1948 में प्रकाशित हुआ था, तब उसमें भाई–बहन के यौन सम्बन्धों की प्रस्तुति के कारण पर्याप्त विवाद हुआ था। लेकिन आज भूमण्डलीकरण के प्रभावस्वरूप ऐसे सांस्कृतिक स्खलनों का चरम रूप हिन्दी साहित्य की विभिन्न विधाओं में अंकित हो रहा है और कहीं कोई विरोध नहीं होता। हिन्दी साहित्य में अपसंस्कृति का प्रसार भूमण्डलीकरण का ही परिणाम है। इससे राष्ट्रीय और जातीय पहचान के लोप खतरा बढ़ता ही जा रहा है।

आज का हिन्दी साहित्य सूचना क्रांति, सैटेलाइट क्रांति, डिजिटल क्रांति के सम्पर्क से भूमण्डलीकरण की व्यापकता का लाभ उठा रहा है– यह भी सच्चाई है। कुछ दशक पहले तक हिन्दी और अन्य भारतीय भाषाओं में विश्व साहित्य की प्रस्तुति विलम्बित होती थी। आज संसार की किसी भी भाषा में प्रकाशित लोकप्रिय कृतियाँ तत्काल अनुदित होकर हिन्दी पाठकों के सामने आ जाती हैं। मुल्कराज आनन्द, कमला दास आदि भारतीय लेखकों की अंग्रेजी पुस्तकें भी हिन्दी में बहुत देर से आई थीं। लेकिन आज सलमान रुसदी, विक्रम सेठ, अरुन्धती राय, तसलीमा नसरीन आदि के उपन्यास विदेशों में प्रकाशित होने पर भी हिन्दी में तत्काल उपलब्ध हो जाते हैं। यह भूमण्डलीकरण की उपलब्धियों का ही प्रभाव है। लेकिन इससे भारतीय रचनाशीलता की अपनी पहचान समाप्त हो रही है। स्थिति यह है कि हम नाजिम हिकमत और पाब्लों नेरूदा की जन्मतिथियाँ रट रहे हैं तथा सुभद्राकुमारी चौहान एवं महादेवी वर्मा की जन्म–शताब्दी भूल गये हैं।

समय आ गया है कि भूमण्डलीकरण के इस दौर में भी हम हिन्दी भाषा और साहित्य की अपनी आधारभूत जातीय प्रकृति और संरचना की संरक्षा की ओर सचेत रहें। भूमण्डलीकरण के सदगुणों से लाभान्वित हों और दुष्प्रभावों का निषेध करें। तभी हिन्दी भाषा और साहित्य के साथ भूमण्डलीकरण की अवधारणा का वास्तविक सम्बन्ध स्थापित हो सकेगा।

सुप्रसिद्ध गोपाल सिंह 'नेपाली' ने हिन्दी को भारत की बोली स्वीकार करते हुए लिखा है कि इसे अपने आप विकसित एवं पनपने देना चाहिए क्योंकि हिन्दी जन–मन की गंगा है–

'दो वर्त्तमान का सत्य सरल, सुंदर भविष्य के सपने दो।
हिन्दी है भारत की बोली, तो अपने आप पनपने दो।।

अंत में हम कहना चाहेंगे कि, हमें हताश एवं निराश होने की आवश्यकता नहीं है। हिन्दी का भविष्य उज्ज्वल है और एक दिन हिन्दी विश्व भाषा बनकर रहेगी–

कोटि–कोटि कंठो की भाषा,
जन मन की मुखरित अभिलाषा।
हिन्दी है पहचान हमारी, हिन्दी हम सब की परिभाषा।।

विश्व हिन्दी परिषद द्वारा पिछले कार्यक्रमों में सम्मानार्थ व्यक्तित्व

विश्व हिन्दी परिषद के कार्यक्रमों में आमंत्रित अतिथिगण

हिन्दी दिवस — 14 सितम्बर 2018

अध्यक्षता
डॉ. सत्यपाल सिंह
मा॰ केन्द्रीय राज्यमंत्री
मानव संसाधन विकास मंत्रालय

उद्घाटनकर्ता
श्री विजय गोयल
मा॰ राज्यमंत्री (संसदीय मामले एवं सांख्यिकी और कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय)

मुख्य वक्ता
श्री अतुल कोठारी
माननीय राष्ट्रीय सचिव
शिक्षा–संस्कृति उत्थान न्यास

विशिष्ट अतिथि
प्रो. किरण घई सिन्हा
पूर्व राष्ट्रीय उपाध्यक्ष, भाजपा

विशिष्ट अतिथि
श्री आर.के. मिश्रा
उपमहानिदेशक, आई.टी.बी.पी

विश्व हिन्दी दिवस — 10 जनवरी 2018

अध्यक्षता
इन्द्रेश कुमार
अ.भा. कार्यकारिणी सदस्य (आरएसएस)
एवं अध्यक्ष-मुस्लिम राष्ट्रीय मंच

मुख्य अतिथि
आर.के. सिंह
मा. केन्द्रीय राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार)
विद्युत मंत्रालय

मुख्य वक्ता
सत्य नारायण जटिया
उपाध्यक्ष संसदीय राजभाषा समिति
एवं सांसद - राज्य सभा

सम्मानार्थ व्यक्तित्व
राहुल देव
वरिष्ठ पत्रकार

विशिष्ट अतिथि
संजीव मिश्रा
वित्त सलाहकार (के.रि.पु.ब.)

हिन्दी दिवस — 14 सितम्बर 2017

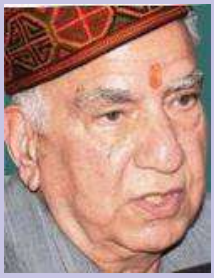

अध्यक्षता
शांता कुमार
पूर्व मुख्यमंत्री, हिमाचल प्रदेश एवं
माननीय सांसद-लोकसभा (कांगड़ा)

उद्घाटनकर्ता
हंसराज गंगाराम अहीर
माननीय केन्द्रीय राज्यमंत्री
गृह मंत्रालय

मुख्य अतिथि
आर.के. सिन्हा
माननीय सांसद-राज्यसभा

विशिष्ट अतिथि
ए.के. मित्तल
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक
(एनबीसीसी)

संयोजक
डॉ. बिपिन कुमार
महासचिव–विश्व हिन्दी परिषद

विश्व हिन्दी दिवस — 10 जनवरी 2017

अध्यक्षता
प्रो. कप्तान सिंह सोलंकी
महामहिम राज्यपाल
हरियाणा

मुख्य वक्ता
श्री तरुण विजय
माननीय सांसद-राज्य सभा

मुख्य अतिथि
श्रीमती मीनाक्षी लेखी
माननीया सांसद
नई दिल्ली क्षेत्र

मुख्य अतिथि
श्री प्रभास कुमार झा
माननीय सचिव, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय

विशिष्ट अतिथि
श्री के.एम. सिंह
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, एन.एच.पी.सी.

हिन्दी दिवस — 14 सितम्बर 2016

अध्यक्षता
डॉ. मुरली मनोहर जोशी
माननीय सांसद एवं पूर्व केन्द्रीय मंत्री,
भारत सरकार

उद्घाटनकर्ता
श्री अनंत कुमार
माननीय केन्द्रीय मंत्री,
रसायन और उर्वरक मंत्रालय, भारत सरकार

मुख्य अतिथि
श्री किरेन रिजीजू
माननीय गृह राज्य मंत्री,
गृह मंत्रालय, भारत सरकार

मुख्य अतिथि
श्री अश्विनी कु.चौबे
माननीय सांसद एवं पूर्व मंत्री बिहार

मुख्य अतिथि
डॉ. अरुण कुमार
माननीय सांसद-जहानाबाद

विश्व हिन्दी परिषद

एस.1, द्वितीय तल, उपहार सिनेमा व्यावसायिक परिसर, ग्रीन पार्क एक्सटेंशन, नई दिल्ली–110016, फोनः 011–41021455
ई–मेल : vishwahindiparishadoffice@gmail.com, वेबसाईटः www.vishwahindiparishad.org
https://www.facebook.com/vishwahindiparishad/ 85860 16348